

श्रीगणेशाय नमः ॥ ओं नमो कर्मप्रकारका ॥ सद्दिव्याविधि विवेका ॥ कर्मधर्मप्रतिपादका ॥ ज
 गन्नायका गुरुव्या ॥ १ ॥ वर्णाश्रमदिमर्यादा ॥ साचासतु तू गोविदा ॥ तू कारणवेदानुवादा ॥ विवादसंवादानुमुदा
 २ ॥ तू रुद्रवाह्य सृष्टीचा अर्क ॥ तु वेदगुह्यशकाशक ॥ तू चिह्नकलाश्रनेकु ॥ व्याप्यापक तू चित्तू ३ ॥ तू चित्तू वि
 धिविधान ॥ तू बालका तू चिंमोन ॥ लका आणि जनाईन ॥ होनि संपूर्ण तू गुरुराया ॥ ४ ॥ यातामी श्रीभागवता ॥ तू चि
 अर्थतू कविता ॥ तू चि उगथनि बोधकता ॥ तू चि बालविता तू आश्रा ॥ ५ ॥ जैश्री आपुतीच उत्तर ॥ पडिसाद होति प्रयो तर
 ते वि मासनी मुखातर ॥ तू कविद्वारे बालका ॥ ६ ॥ बालका श्रीभागवति ॥ श्रीकृष्णकृपा मूर्ति तिणवर्णाश्रमगुपती ॥ यथा
 स्थीति सांगीतली ॥ ७ ॥ सप्तदशाधायी श्रीकृष्णसंगम ॥ सांगीतला ब्र प्रचर्य धर्म ॥ गृहरथाचे स्वधर्म कर्म ॥ नियमनिरु
 पिते ॥ ८ ॥ आता अष्टादशाधायी जाण ॥ वानप्रस्थाश्रमलक्षण ॥ सन्यासधर्माचे निरूपण ॥ स्वयं श्रीकृष्णसंगत ॥ ९ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ वने विविधः पुत्रेषु भार्यानिस्थसहैव वा ॥ वनएव वसेच्छान्तस्तृतीयं भा
 गवतः ॥ १० ॥ आता आनुक्रमे निरूपण ॥ वानप्रस्थाचे आले जाण ॥ यासी वनासी निधावया कारण
 आयुषलक्षणविभाग ॥ १० ॥ आता युषु रूप मर्यादा श्रुति ॥ साचा श्री तीयभागाची स्थिति ॥ सा सृष्टी क्रमिल्या आति ॥
 वनाप्रतिनिधावे ॥ ११ ॥ निधावया वनाप्रति ॥ भार्यादिउनिपुत्राचे हाति ॥ अपणनिधावसी द्यगति ॥ वानप्रस्थी वनवासा
 १२ ॥ भार्याशिथी प्रतिव्रतासी ॥ ईश्वरस्वरूपमापति ॥ श्रतारनिधता वानप्रस्थी ॥ जे पुत्रा प्रतिराहेना ॥ १३ ॥ सां
 दीता श्रतारसेवसी ॥ कल्मात होय पाहे जीसी ॥ जे श्रतार वरणिची दासी ॥ तसे वनासी आना वि ॥ १४ ॥ जो पुरुष स्त्रीस
 प्रवेत ॥ वणिजाता वानप्रस्थ ॥ तणे स्त्री कामासी अतीस ॥ होवे दृ ७ व्रतते उमाश्रमी ॥ १५ ॥ जो वानप्रस्थ वनवासी ॥ तणे दृ
 ७ धरा वि व्रान्तिमानसी ॥ नातळोव कामक्रोधासी ॥ हेही व्रतयासी अवराक ॥ १६ ॥ श्रीकृष्णकृपा मूर्ति तिणवर्णाश्रमगुपती ॥ यथा
 मकलयेन ॥ वसी तव लयने वानप्रस्थाश्रमलक्षण ॥ जे जन्मली कृतुकाक ॥ २ ॥ टिका ॥ वनिचि कंदमूल फले ॥ जे जन्मली कृतुकाक

- ते ही श्रुति पवित्रनिर्मले ॥ आहारतणे मेळे करावे ॥ १७ ॥ वणवासी वस्त्रजाण ॥ बिलकला व्याघ्र मृग जीवै न ॥ अथवाने
 साविके वळ तृण ॥ कापरणा ११२ णदृक्षाचे ॥ १८ ॥ बान प्रस्थीने मग्न हण ॥ एक त्याचे ही लक्षण ॥ त्याने माचे निरुपण ॥
 स्वये नारायण सागत ॥ १९ ॥ **श्लोक ॥ के शारोम नख स्म श्रु मला नि वि वि श्रु या दतः ॥ न धावे द प्स म**
जे त्रिका लं स्थ डी ले रायः ॥ ३ ॥ टीका ॥ के शारणी जे मसकिचे ॥ रो श्रु बो लि जे मु सीचे ॥ रो म तं
 क क्षो प रथीचे ॥ छ द न या चे न क रावे ॥ २० ॥ मसकि न करा वं पण ॥ न करा वे श्रु कर्म जाण ॥ न करा वे लो म छ द
 न ॥ दत धा व म न करा वे ॥ २१ ॥ स्नान मु श ल व र्ते के वळ ॥ श्राव द्रय क करा वे श्री काळ ॥ परि क्षा का वे ना शारि र मळ ॥ व्र
 त ब्र वळ व न स्था ॥ २२ ॥ के वळ भूमि व रि शाय न ॥ सदा सर्व दा करा वे जाण ॥ घाता वे ना त कि तृण ॥ मग व स्त्र भ र ण ते के
 चे ॥ २३ ॥ या परि वान प्र स्थे जाण ॥ दृढ धारो नि व्र त धार ण ॥ करा वे त पा च र ण ॥ ते त प ल क्ष ण आ व धारि ॥ २४ ॥
श्लोक ॥ ग्री श्रु त प्ये त पंचाग्नी नू व र्क त्या सार षा डु ले ॥ आ कंठ मग्नः त्रि वि र ए व इ त स्त प श्वे र
४ ॥ टीका ॥ ॥ उष्णा का वि प चाग्नी ॥ अग्नि कु डे च हु क डु नि ॥ पाच वार वि मा ध्या ही ॥ ऐ सा प चाग्नी
 सा धा वा ॥ २५ ॥ माळा करो नि उंच प्र देशी ॥ य न वर्ष ता धारा व र्ते री ॥ तेथे हा वे उ ना का रा गा सी ॥ वर्षा का की
 ऐ शी त प प्रा सी ॥ २६ ॥ उ ग ली या उ म त ऋ रै तु सी ॥ आ कंठ मग्न जळ वा सी ॥ जळ वा स क रा वा आ ह नि री ॥ हे वा
 न प्र स्थी सी त प क्री या ॥ २७ ॥ हे त प क्री या प्रो ति व रू षी ॥ वि ही त वा न प्र स्थी सी ॥ वय सा पर त्वे भ क्ष णा सी ॥ हृ षी के
 शी सां ग त ॥ २८ ॥ **श्लोक ॥ अग्नि पंके सम श्रिया काल पंके म धा वि व ॥ उ कू र्व ता स्म कु यो वा दं तो लू र्व ल ह**
व वा ॥ ५ ॥ टीका ॥ अग्नि स्त व पा का आ ली ॥ का का ल जे परि पं कू र्ता ली ॥ ते ता प सा ला गी भ र्ती ॥ उ ना हा रा वि
 ली उ दा र्थ ॥ २९ ॥ दा त अ स ली या व कि ॥ फुळे र्वा वि ते णे स क ली ॥ का गे ली या दा त स मू की ॥ कां डु नि उ र्व ली सु र्वे
 र्वा वि ॥ ३० ॥ अ रि उ र्व ल न मिळे व नि ॥ त रि र्वा वि द ग डे चु नि ॥ ना ही चा ड गो ड प णि ॥ ३१ ॥ धा नि वार णि अ हा रा र्थ ॥ ३१ ॥ **श्लोक ॥**

स्वयं सविनुयासर्वमासनादृते कारणे ॥ देवाकालबलाभिला नाददीता न्यदाहते ॥ ६ ॥ टिका ॥
ऋतुकाळी फळे सपूर्ण ॥ ते काळातराकारणे ॥ संग्रह सर्वथानकरणे ॥ व्रताधारणे वनस्था ॥ ३२ ॥ पूर्वदिवसी
फळे प्राणिली ॥ अपरदिवसी जरि उरली ॥ ती श्रवणपा हीजे ते जीली ॥ नाही वालीली आहाराथी ॥ ३३ ॥ प्रथमी आह
र्थी जाण ॥ फळे आनावितुतन ॥ जीर्ण फळाचे भक्षण ॥ निशीद्द जाण वनस्था ॥ ३४ ॥ आणि फळे जे प्राणिली ॥ ते आं
गी कारानिशीद्द जाती ॥ जे सकळे आजीली ॥ तेचि वहीली अहाराथी ॥ ३५ ॥ देवाकालवर्तमान ॥ इष्टभूत कन लक्षा
न ॥ तरिसंग्रहन करावा जाण ॥ अदृष्टधारणविधारे ॥ ३६ ॥ पराचा प्रतिग्रहो पूर्ण ॥ सर्वथानकरावा आपण ॥ प्रति
ग्रहो घेता जाण ॥ व्रतखंडन वान प्रस्था ॥ ३७ ॥ **वन्ये श्वर उरो उरो निवपे कालको रतान् ॥ ननु श्रौते तपसु**
ना मां यजत्वना ममी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ जो वान प्रस्थ स्त्री समवेत ॥ त्या स्त्री आग्नि होत्र सात्वे प्रासा ॥ ते का कर्म जे वेदोक्त
ते करावे समस्त वनवासी ॥ ३८ ॥ वनि जी फळे ज्या ऋतुस ॥ तेचि कत्वा वाचरपुरा उावा ॥ तेणे सुजावामी यज्ञपुरुष ॥ सा
वकाशमत्रोक्त ॥ ३९ ॥ परिश्रौत कर्मविधान ॥ यागार्थपशूहनन ॥ तैवान प्रस्थासि नाही जाण ॥ वनफळि यजन यागाचे ॥
४० ॥ श्लोक ॥ अग्नि होमं च दक्षिण पूर्णमास चापुर्ववत् ॥ चातु मास्य लि च मुने राम्ना ता नि च नै गमै ॥ ८ ॥
॥ टीका ॥ पूर्व आग्नि होत्र कर्म जैसी ॥ गृही होति गृहस्थात्री ॥ तेचि चालवा वि वनवासी ॥ वदा ह्यसी वन स्थो ॥ ४१ ॥
अग्राय आगमनिगमासी ॥ जाणोनि करावे यागासी ॥ दक्षिण मास चातुमासासी ॥ निःकामते सी वेदाज्ञा ॥ ४२ ॥
ऐसा मुनि श्वर वनवासी ॥ तपस्वीत जो रासी ॥ त्याची ये फळ प्राप्तीसी ॥ स्वयेदुषी वेदगी संगत ॥ ४३ ॥ **एवं चीर्णन**
पसा मुनिर्धमनिसंततः ॥ मातुं पोमय माराध्य ऋषि लोक्रुदुपैति मां ॥ ९ ॥ टिका ॥ हे सेवेदोक्त तपसाचार
असी व्यभावे असा दर ॥ साक्षेपे करि निबंतर ॥ असी मातुं देह उरे ॥ ४४ ॥ सुष्करा रिपंजरा ॥ लंचेने साकित्तीयात्री रा
परिसामर्थ्य अति खरा ॥ नसरे माघा रातपोनिष्टे ॥ ४५ ॥ ऐसे या वज्रमकरिता तप ॥ तोस बाह्य जाला मिः पाप ॥

२
सद

लाहोनि क्षाने सैरूप ॥ मासेस्वरूपतो पावे ॥ ४६ ॥ अवशेष वासना असता ॥ सूक्ष्मरूपे प्रतिबद्धता ॥ तपभिमानी
तवृता ॥ देह अहता अनुमात्र ॥ ४७ ॥ चरि फळ आशापोधी नाही ॥ ऐसेमिनि मोला जो देही ॥ तो पावोनि ऋषी लो
का चारायी ॥ तेथोनि पाही मज पावे ॥ ४८ ॥ जो ऋषी लोकाते पावला ॥ तो क्रमे मुक्ति चामार्गा आला ॥ तेथूनि क्रमेचि म
ज पावला ॥ यापरि उद्धरला वनस्य ॥ ४९ ॥ श्लोक ॥ यस्वै तत्कृच्छतश्चीर्णं तपोनिः श्रयसं महत् ॥ कामाया
त्मीयसेयुं ज्याद्वा लिवाः क्रोऽपरस्ततः ॥ १० ॥ टीका ॥ एवं वान प्रस्य अतिकठी ॥ तपादि साधन सकठी ॥
भोग फळाच्या सुठी ॥ मोक्षपरि पाटि पावेते ॥ ५० ॥ जे हाता आले माक्ष फळ ॥ अविरी च्यादि मगळ ॥ ते तपाधि साध
न निमळे ॥ कामार्थ केवळ कल्पति ॥ ५१ ॥ जेवि काचितं मणी येचि यासादि ॥ मागे चाती लागी खापर खुटि ॥ कापरि सदे
रु निपा लटि ॥ काकी गोमटि विट मागे ॥ ५२ ॥ जेवि मनुष्यपणाचि स्थीति ॥ उत मज्जेत प प्राप्ती ॥ ते तप क्रीया व्यर्थ करिति ॥ काम
वांछीति ते मूर्ख ॥ ५३ ॥ त्या मूर्खाचे मूर्खपण ॥ कीति सांगावे गहण मोक्ष प्राप्तीचे साधन ॥ कामतीसा जाणना शीले ॥ ५४ ॥
असो हे मुखाचे कथन ॥ वान प्रस्थाचेचि लक्षण ॥ पुढील सांगे ण सपूर्ण ॥ शरीरार्थ जाण सुनिश्चित ॥ ५५ ॥ जो वान प्रस्य
आपण तपाधि साधने अतिक्षीण ॥ क्षालातरि वै राग्य जाण ॥ यासी जाण नुपजेचि ॥ ५६ ॥ पन्नास वर्षे गार्हस्य ॥ दोनि द्वादशो वा
वान प्रस्य ॥ स्वाला जरि जा आ प्राप्त ॥ वै राग्य युक्त निज क्षान ॥ ५७ ॥ आयुष्याचे तिन भाग वरि ॥ वेचले गेले कापरि ॥ आता चतुर्थ भा
ग उरला उरि ॥ क्षीण करिरी जर्जर ॥ ५८ ॥ ऐसे करि रजाती या क्षीण ॥ अत्मही वै राग्य जाण ॥ करोवे सन्यास ग्रहण ॥ कर्माचरण
या शक्ती ॥ ५९ ॥ वान प्रस्था श्रीमी क्षालाही ॥ विरोध वै राग्य का आत्मही ॥ सर्वथानुपुजे जा चारायी ॥ साचा आधिकार पाही हरि वा
लो ॥ ६० ॥ श्लोक ॥ यदाऽसौ नियमेऽ कल्माजरया जात वेपथुः ॥ आत्मन्यग्नी नू स मारोप्य मञ्ची नोऽ ग्नि समा विश
त् ॥ ११ ॥ टीका ॥ सर्वथा वै राग्य नुटे देही ॥ जरा आळी गईचे रायी ॥ स्वधर्माचरण शक्ती नाही ॥ कंपणाही संवागी ॥ ६१ ॥
ऐसा वान प्रस्य वन वासी ॥ आत्मा समारोप करुनि आसि सी ॥ माते दृढ ध्याउनि मानसी ॥ अग्नी प्रवेदो रि गावे ॥ ६२ ॥

३

वान द्र स्यात्प्रमी वनस्य ॥ अतिशय हात्वा विरक्त ॥ तथाचि उत्तर विधि समस्त ॥ स्वयभ गंव तसां गतसे ॥ ६३ ॥ श्लोक ॥ यदा
कर्म विपाक पुत्रो केषु निरयामस्त ॥ विरागो जायते जायतस्य क्व च्यरताग्निः प्रव्रजेत ॥ १२ ॥ टिका ॥ वान द्र
स्थो अनुष्ठानात्तेणै वैराग्य अति गहन ॥ इन्द्र चंद्रादि ब्रह्म सदन ॥ निरया समान जो न नि ॥ ६४ ॥ ऐसा दृष्ट वैराग्य उठावा ॥ तेणे विही
ताग्नि कोळ खावा ॥ त्याग करूनि आधवा ॥ अंगी कारवा सन्यास ॥ ६५ ॥ ते सन्यास ग्रहण स्थीति ॥ यथाशास्त्र यथापद्धति ॥ ते सा ग
त आह श्रीपति ॥ याथा निगुती विहीतार्थ ॥ ६६ ॥ श्लोक ॥ इत्या यथापदे रां मां द ता सर्व स्व म् ॥ सीजे ॥ अग्नी स्व प्राण आ
ब रय निरपेक्षः परिव्रजेत ॥ १३ ॥ टीका ॥ अष्टाश्राद्धादि विधान प्राजापत्य नामे ली साधन मत्र भगवंता ते यजुन सर्व स्व
दान करे विजां ॥ ६७ ॥ मुख्य वे मूर्त जो आग्नी ॥ तो निज हृदई संस्था पुनि ॥ अग्निः क्रोष दे दुनि ॥ सन्यास करूनि निरपेक्ष ॥ इ
सन्यास करिता ययी ॥ विघ्ने उपापार उट ति पा ही ॥ तीर गुडुनिया पायी ॥ सन्यास ति ही करावा ॥ ६८ ॥ श्लोक ॥ विघ्न स्व वैरा
ग्य सतो देवा शारादि रूपिणः ॥ विघ्ना कुर्वं स्यं ह्य स्वाना क्रम्य समियासु रं ॥ १४ ॥ टिका ॥ सन्यास करिता जो
श्री आ त्यास समस्त देव मिळोन ॥ नाना स्त्रीया दि रूप जाण ॥ अनंत विघ्न करुयेति ॥ ७० ॥ विघ्न करावया कारण ॥ मुनुष्य दे
वा चाप शू जाण ॥ सदा आर्षी बळी दान देवा आधीन सर्वदा ॥ ७१ ॥ तो बळी ने दी यथू नि आता ॥ पावदे उ नि आमुचे माथा ॥
घे उ पाहे ब्र ह्म सा युज्यता ॥ या लागी सर्व था विघ्न करिती ॥ ७२ ॥ ऐसा वै राग्ये उ द्भूट ॥ विवेक ज्ञाने अति श्रेष्ठ ॥ सन्यास ग्र
हणे वरिष्ठ ॥ विधि निष्ठ विभागे ॥ ७३ ॥ ऐवं सा ल्या सन्यास ग्रहण ॥ त्याचे विधिचे विधि विधान ॥ स्वयसांगता रु नाराय
ण स्वधर्म लक्षण तथाचे ॥ ७४ ॥ श्लोक ॥ विभू या च्चे न्मु नि वसिः कौपी ना च्छा दनं परं ॥ यत्कं ने दं उ पा
या भ्या म न्य किं चि दनापदि ॥ १५ ॥ टिका ॥ भूता अभय दान पुरस्कर ॥ संकल्प पूर्वक प्रषो च्चार ॥ ते उरले दिसे
देह मात्र ॥ सर्व स्व यरे सा गीले ॥ ७५ ॥ जो गुरु वाक्य श्रवण सरिसा ॥ वस्तू चि होउ नि देला आपैसा ॥ उठा ला दे
ह बुद्धी चा वळ सा ॥ तुटला का फा सा कर्माचा ॥ ७६ ॥ सा सी विधि विधान कर्तव्यता ॥ बो लो चि न य सर्व था ॥ न वनि

त आती या हाता। रिते ता क आता कोण घुसळी ॥७७॥ कापुर मीळालि याव न्ही। तोपरते ना कापुर पणि। ते वि
 वस्के साळा जो गुरु श्रवणी। तो विधी कि करणी वर्ते ना ॥७८॥ परि गुरु वा म्यत वता ॥ या सी रे शी हे भावस्थाः
 सत्य न बाने सर्वथा ॥ साची विधान ता आवधारि ॥७९॥ गुरु वा म्याचे करिता मनन ॥ नागी व पणे लाजे मन ॥ त
 रिती गमात्र आच्छादन ॥ कोपिन जाण धरावि ८० ॥ ईतुके न निर्वाहन सरे ॥ ऐसे जाण वळे जे पुरे ॥ तै वस्त्र संड दुस
 रे ॥ स्वाधी कारे करावे ॥ ८१ ॥ दंड क मंडलु जव आहे ॥ तव कोपिन बहिर्वास राहे ॥ दंडाचे या त्याग संवेपाहे ॥ याग होय व
 स्त्राचा ॥ ८२ ॥ आपत्ती काळी सन्यासा सी ॥ रोग का गला होय जासी ॥ काजरे ने व्यापिले देहा सी ॥ तै जे का गल सा सी ते या
 वे ॥ ८३ ॥ गुरु वा म्य श्रवण मनन ॥ ऐसे साधी जो साधन ॥ सा साधकाचे लक्षण ॥ स्वय श्री हृष्ठा सांगत ॥ ८४ ॥ श्लो ॥
 दृष्टि पूतं न स सा देव स्वपुते विवे जलं ॥ ८५ ॥ सुपूतं वदेदा च मनः पुतं समाचरेत् ॥ १६ ॥ टिका ॥
 दृष्टी ठेगु निजाण ॥ पृथ्वी पादु नि पावन ॥ हे सा गते करि गमन ॥ अनुसंधान निज वृत्ति ८५ ॥ जीथे जीव संपदा दृष्टी पडे
 तै प्राण गेल्या न चले पुढे ॥ जीवित्ता काळु नि पुढे ॥ जीवित्ता काळु नि कडे ॥ पातुल पडे आति सुद्ध ८६ ॥ आधी च पवित्र गंगा
 जळ ॥ साचे निर्मळ वस्त्रे नि रसो नि मळ ॥ या परिकरो नि या निर्मळ ॥ गंगा जळ सेविति ८७ ॥ ज्याचे वाचेचे आळा ७३
 ससाचा लृण राळा ॥ जाळु नि वैराग्य ज्याळा ॥ ससाचा तु गवला कल्ल दम ॥ ८८ ॥ ज्या कल्प दमा चि वन फळे ॥ परिपक्व आ
 णि स्वज्वळे ॥ मधुर रसे सीर साळे ॥ अति निर्मळे घवे घवित ॥ ८९ ॥ जेश्रवणे अति गोड ॥ पुरवि श्रोत याचे कोड ॥ निववि जी
 वाची चाड ॥ ससुर वाड वाचेचा ॥ ९० ॥ हे सहज सन्यासाचे ध्यान ॥ अहमेव नारायण ॥ तेदु धरोनि आनुसधान
 पवित्र मन करावे ९१ ॥ मन करो नि पावन ॥ पृथ्वी विचारा विजाण ॥ सामनाचे पवित्रपण ॥ सर्वत्र आपण लक्षावे ९२ ॥ स
 न्यासाचे धर्म जाण ॥ मुख्य वे हे चि लक्षण ॥ पवित्र करो नि अतः कर्ण ॥ सर्वत्री नारायण रक्षा ग ९३ ॥ मनाचे पवित्रपण
 उद्धारा या नाव जाण ॥ आता त्रीं दंडाचे लक्षण ॥ सन्यास चि नृते ऐक ॥ ९४ ॥ श्लोक ॥ मो नानि हा नि ला या मा दे
 उ वा गे रुचे त सां ॥ न ह्येत य सर्वे सं गवेणु सिर्न भवे यतिः ॥ १७ ॥ टिका ॥ ॥ मौ न आथ वा स स भा षण ॥

का श्री राम नामाचे स्मरण ॥ हो का ओं काराचे उच्चारण ॥ वाग्दंड जान या ना व ५५ शरिरीचे जीतुके चळण
 ते प्राणाचे निबळे जाण ॥ या प्राणाचे प्राण रोधन ॥ करावे प्रापण प्राणा यामे ॥ ९६ ॥ प्राणा यामे निज प्राण ॥ जीनो नि
 करावा स्वाधीन ॥ याना व देह दंड जाण ॥ ऐकलक्षण मनोदंडाचे ॥ ९७ ॥ मनाचे चपळपण ॥ संकल्प विकल्प जाण ॥ या
 चे करावया छदन ॥ ब्रह्मानुसंधान करावे ॥ ९८ ॥ मासे स्वरूप सर्वगत ॥ तेथ निश्चयेटे विताचित ॥ मन संकल्प विकल्प
 जाय जेथ ॥ तेथ तेथ ते स्वरूप ॥ ९९ ॥ ऐसे सावध राखता मन ॥ दृढ लागल्या आनुसंधान ॥ तव तव संकल्प विकल्प क्षीण
 सहचि जाण स्वये होति ॥ १०० ॥ देहवाचा आणि मन ॥ या त्रिदंडाचे लक्षण ॥ तू जम्या सांगी तले संपूर्ण ॥ सन्यास स्वजा
 ग येणे सत्य ॥ १०१ ॥ हे ति त्रिदंड न सता जाण ॥ केवळे वेणुदंड ग्रहण ॥ तेणे सन्यास न घडे जाण ॥ देह विटंबने द्वाभार्थ ॥ १०२ ॥ स
 न्याशाचा उगार विहार ॥ अचार संचार विचार ॥ स्वधर्म युक्त साचार ॥ सारंग धर सांगत ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ भिशा चत
 पु नर्ष पुनि ग स्वान्वर्जयंश्चरेत् ॥ ससागारान संकृसास्तु खेतलब्धेन तावता ॥ १०३ ॥ टिका ॥ पूर्वि जाण स
 न्यासा सी ॥ चतुर्विणी भीक्षा होति या सी ॥ कलयुगी गोष्ठी जाली कै सी ॥ ब्राह्मणा पासी चतुर्विणी ॥ ४ ॥ जाचि जीविका
 जेण जाण ॥ या ब्राह्मणाचा तो चि वर्ण ॥ एका ते ही प्रकृर्ण ॥ जीविका लक्षण सांगेन ॥ ५ ॥ मुख्य ब्राह्मणाचे लक्षण ॥
 शील उंळ काकोरान ॥ उगाया चीत का आध्यापण ॥ उथवा या जन जीवे कै सी ॥ ६ ॥ जो जीवे के लागी निर्धारि ॥ वास घे
 उनिया करि ॥ शूर रचि जीविका करि ॥ जाणावा क्षत्री ब्राह्मणा मा जीतो ॥ ७ ॥ जो वाणिज रचि वरि ॥ नित्य जीविका आपुली
 करि ॥ तो ब्राह्मणा मा हारी ॥ वैश्या निर्धारि निश्चीत ॥ ८ ॥ जो शूद्राचे शूद्र क्रीये वरि ॥ सदा सर्वदा जीविका करि ॥ तो ब्राह्मण शु
 द्र कर्मे करि ॥ सुद्रव धारि क्रीयोगे ॥ ९ ॥ जे उतमो तम भीक्षान लभे ॥ तै क्षत्रियो ॥ ब्राह्मणी भीक्षा लाभे ॥ क्षात्र ब्राह्मणाचे नि
 अलाभे वैशादि ब्राह्मणी लाभे भीक्षा ग्रहण ॥ १० ॥ ब्राह्मणक्षेत्री वैश्य ब्राह्मणी भीक्षे स उगात्रास हे ति न्ही ॥ तै शूद्र जीवि
 का ब्राह्मणी ॥ भीक्षा ग्रहणी आधी कार ॥ ११ ॥ यात नि यजे ब्राह्मणा आतां ॥ केवळ दोषी उथवा अभी कात ॥ ते भीक्षे सी
 नवोठ वावा हात ॥ हा स्वधर्मार्थ भीक्षे चा ॥ १२ ॥ ते ही भीक्षा अति नेमस्त ॥ भीक्षे सी यता हे कळोने दित ॥ मागा विनेमी

घरे सात ॥ जे साते प्रासतेणे सुखी ॥ १३ ॥ जे साता धरि श्री धा प्राण ॥ ते भीक्षे चा धर्म विहीत ॥ स्वयं सांगे कृष्णा नाथा
स्मृतिवांग्यार्थ प्रयोगे ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ बहिर्जला शयं गै हा तत्रोपसृश्य वाग्यतः ॥ विभज्य पावितं शेषं
शु जीता दोषा मा हतं ॥ १५ ॥ टीका ॥ ग्रामा बाहेर गंगातिरि ॥ आथ वात उ गाचे परिसरि ॥ भिक्षा धरो निया करि ॥ उभा
च मन तिरी करावे ॥ १५ ॥ या चित जे भिक्षेचे आत्म ॥ ते द्वादश प्रणवे अभिमनु न ॥ तेणे मंत्रो दके प्रोक्षिता जाण ॥ होय पावन प
विरु ॥ १६ ॥ चतु र्थां करावे त्या अन्नात्ते ॥ चारि उ अधिकारि सा भा गाते ॥ ब्रह्मा विष्णु उर्क अग्नि भूते ॥ प्रपण तथे अवधारी ॥ १७ ॥
विष्णु कर्त्त जोगाग ॥ तो जकी घाळा वासांग ॥ भूत कर्त्त जोगि भाग ॥ तो गृथी वरि चांगटे वावा ॥ १८ ॥ उरले जे विभाग दो
नी ॥ यती सी अधिकार सेवनी ॥ दीन मागो आती याते क्षणी ॥ भूत दया गुणी अन्न द्यावे ॥ १९ ॥ परिमि एक उन्नदाता ॥ हे आठ उ
नये चित्ता ॥ उगात्मा दोते पणा चि उहता ॥ अधर्मता सन्या सी ॥ २० ॥ मधु करिचे आव घड चिन्ह ॥ समयी मागोयता दिन ॥ येण उ
द्वादश अधिक आत्म ॥ सर्वथा जाण मागोनय ॥ २१ ॥ करिता मधु करि भोजन ॥ रायी आधी कउरली या अन्न ॥ ते सांडी ता अति प
तन ॥ अवघे च जाण भक्षावे ॥ २२ ॥ सन्यास धर्म लघु आहार ॥ निसकरावा निरंतर ॥ अधिक अह रिषि कार ॥ निद्रा उगाळ सकार
वाधिति ॥ २३ ॥ ज्या लागी कि जे चतु र्थां म ॥ तो सन्या सा चा मुख्य धर्म ॥ स्वयं सांगे पुरुषो तम ॥ जेणे आत्मा राम मा विजे ॥ २४ ॥
॥ श्लोक ॥ एक श्वरे न्मही मेता विः सग स्वय ते रिच्यः ॥ आत्म की उ आत्म रत आत्मान् सप्र दर्शिनः ॥ २० ॥ रि
स दी उमो गी वै रोग्ये पुरते ॥ जा उपापेक्षी ना संगायते ॥ निः संग होत साता चितो ॥ रुखे ए थी ते वि चरतु ॥ २५ ॥ इ द्वी ये का धो नि चित्ता चा पायी
चित्त का वि चैत न्या चा रायी ॥ तेणे चिन्मा ठ सावे दे ही ॥ दि ह वे दे ही स्मरेना ॥ २६ ॥ ऐ सा उगा म स्थि ति चा उच्य म ॥ तेणे उगा म त्रि उ चा उगा
राम ॥ आत्म सुखा चा स भ म ॥ अनुभव परम तो रेक ॥ २७ ॥ आत्म स्थि ती निजो म युक्त ॥ तेणे उगा म सुखे उक्ता सत ॥ सदा सप्र दर्शनि उ
क्ता ॥ वोस उत सम साम् ॥ २८ ॥ ऐ सी या सुखा चिस पति ॥ भोगा व या सु निश्ची ति ॥ सदा एका कि वसे एका ति ॥ ते चि श्री पति सांगे त
२९ ॥ श्लोक ॥ विविक क्षे म चरणो मद्रा व वि मला शयः ॥ आत्मानं चिंतय रेक म भेदे न मया मुनिः ॥ २ ॥ टीका ॥

पवित्राणि विज्ञाने ॥ प्रकृत प्राणि एकं तस्थान ॥ तथे मासे अनुसंधान ॥ सद्भोवे जाण सर्वदा ॥ ३० ॥ ले
णे सांडून जे न पद दुश्चीत ॥ सदा एकाती कवे निरत ॥ मद्भोवे सु निश्चीत ॥ आस सुख प्राप्त साधका ॥ ३१ ॥ जा
सी निजो म सुख क्षाले प्राप्त ॥ ते होय अनन्य वारणागत ॥ मी वाचनि जगा आता ॥ आणिक अर्थ देखेना ॥ ३२ ॥ ऐसे
अनन्य करिता मासे ध्यान ॥ साधक विसरे मितु पण ॥ ते का अभेद चै त न्यपण ॥ मद्रूप जाणतो होय ॥ ३३ ॥ या मद्भ
द्रुपाचि स्थीति ॥ पा हो जाता नि जात्मवृत्ति ॥ मीना तो ए सो होय गति ॥ अभेद प्राप्ती या नाव ॥ ३४ ॥ जे व असे द्वैत वार्ता
ते व भयाचि बाधकता ॥ अभेद व आ ल्या हाता ॥ निर्भय त साधका ॥ ३५ ॥ अभेद प्राप्ती चा गयी ॥ बंध मोक्षाचि वार्ता
ना ही ॥ गडगर्ज बंध मोक्ष पा ही ॥ नांदति न वार्द हरि बोले ॥ ३६ ॥ श्लोक ॥ अन्वीक्षेतात्मना बंधं मोक्षं वक्षाननिष्ठया
बध इन्द्रियविषयो मोक्ष एवांच संयमः ॥ ३७ ॥ टिका ॥ एक्य पावो नि एक्यता ॥ तेथुनि बंध मोक्ष पा हाता ॥ दे ही चि मि
ध्या वार्ता ॥ गायिकता निश्चीत ॥ ३८ ॥ वृत्ति मा जी बंध मोक्ष ता ॥ या दो ही चि वि भाग ता ॥ इंद्रीयाचि जे विषय सकता ॥ दृढ ब
द्धता ति नाव ॥ ३९ ॥ काया वाचा चित वृत्ति ॥ नीः शेष विषयाचि विरक्ती ॥ या नाव साचार मुक्ती ॥ जाण निश्चीति उद्धता ॥ ४० ॥
जासी साचार पा ही जे मुक्ति ॥ तेणे करा वि विषय निवृत्ति ॥ हि मुख्यत्वे उपाय स्थीति ॥ कृष्ण कृपा मूर्तिसांगत ॥ ४१ ॥ श्लोक
तस्मान्नि यम्य पदं मद्भाने न चरे नुनिः ॥ विरक्तः श्लक्ष्ण कामेभ्यो ध्यात्स नि सुखं महत् ॥ ४२ ॥ टीका ॥ येणे विचा
रे विचारिता ॥ विषयासक्ती दृढ बंध ता ॥ या विषया चा त्याग करिता ॥ निज मुक्तता सहज ची ॥ ४३ ॥ तेचि विषयाचि विर
क्ती ॥ केवि अतुडे आ पु ल्या हाति ॥ या लागी वै राग्याचि उल्लसति ॥ साधके निश्चीति साधावि ॥ ४४ ॥ अंतरि वासना दृढ मूळ वि
षय राखा तेणे सबळ ॥ ते वासना छेदावया समुळ ॥ वैराग्य सबळ साधावे ॥ ४५ ॥ वैराग्य प्राप्तीचे कारण ॥ स्वधर्म कर्म म
दर्पण ॥ सांडावे कर्मचे कर्तपण ॥ मदर्पण या नाव ॥ ४६ ॥ मदर्पण कर्म स्थीति ॥ तेणे माझा टायी उप जे प्रीती ॥ मासे नाम मा
सी किर्ति ॥ चित न चित्ति पै मासे ॥ ४७ ॥ ऐसी या माझा परम प्रीति ॥ होय वै राग्याचि उल्लसति ॥ तेणे विषयाचि विरक्ती ॥ मासी सुख

प्राणी ज्ञानैः ज्ञानैः ॥ १६ ॥ मासेनिरुखे मासे भजन ॥ अत्यंत थोरा वेपै जाण ॥ ते हा सर्वत्र मद्रा वन ॥ ब्रह्मत्व जाणत सा वे ॥ १७ ॥
 सर्वत्र ब्रह्म भावन ॥ ब्रह्म स्वस्वचे अनुसंधान ॥ धरुनिकरा वेपर्याटण ॥ जवनिवास मन होय ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ पुरगाम ब्रज
 न्साधनं भिक्षाऽर्थप्रदित्वा श्वरेत् ॥ पुण्यदेरासरिच्छे लवनाश्रमवती मही ॥ २४ ॥ टीका ॥
 पृथ्वी विचरणे विचित्र ॥ पुण्यदेवा कुरुक्षेत्रे ॥ सप्तसप्तपुण्या परमपवित्र ॥ पुष्करादिथोर महातिर्थे ॥ १९ ॥ कृतमात्मापयस्विनि
 पुण्यरूपताम्रपर्णी ॥ गौतमीरेवात्रिवेणी ॥ परमपावणी गोमती ॥ २० ॥ कृष्णा वेण्यातुंगभद्रा ॥ तपतीपयोष्णीतिगभिश्चरा ॥ य
 मुना भागिरथीतिरा ॥ गंगासागरासगमी ॥ २१ ॥ दृष्ट्यमुकश्रीरौत्व्यंकटाद्री ॥ मूळपाटिचाद्रोषाद्री ॥ गौतमीतिरि
 चां ब्रह्मगीरि ॥ जोपापेसहा रीयात्रामात्रे ॥ २२ ॥ होकाचठता हीमगीरि ॥ पंदीदुरितातेदुरकरि ॥ नीः शोष
 पापाते निवारि ॥ यात्रामुनेश्वरी अवश्य किजे ॥ २३ ॥ इडकारण्यबृहद्दन ॥ नैमिषारण्य अनदवन ॥ इत्यादीवनाचे
 गमन ॥ सन्यासी जाण करावे ॥ २४ ॥ अथ वलकृपी लव्यासश्रम ॥ गौतम कामन उश्रोतम ॥ यात्राश्रेष्ठ बरी काश्र
 म ॥ जो सकळ कर्म दाहक ॥ २५ ॥ ऐसी स्थिते जीपावन ॥ तेथे सन्यासी करावे गमन ॥ मार्गी भिक्षार्थजे आटन ॥ ते
 हीनिरूपण आवधारि ॥ २६ ॥ हाट हट वटिया तुत्तम ॥ याते पूर हणति नरोत्तम ॥ हाट हट वटिया हीन तो ग्राम ॥ भि
 क्षाचाने मसारा वातेथे ॥ २७ ॥ गाथी गौत्रीयाचे निवास स्थान ॥ ब्रज त्याते हणणे जाण ॥ सार्थप्रणिजेपं क्हास
 पूर्ण ॥ भिक्षार्थ उठन करावे तेथे ॥ २८ ॥ पवित्रभीक्षेचे प्राणी कारणे ॥ सन्यासी उवश्य जाणे ॥ तैची अर्थचे नि
 रूपणे ॥ स्वयं श्रीकृष्ण सांगीजे ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ वानप्रस्थाश्रमपदेत्वं भीक्षुं भैक्ष्यमाचरेत् ॥ संसिद्धत्या व
 संमोहः शुद्धसत्त्वित्वांधसा ॥ २५ ॥ टीका ॥ शुद्धहावयाश्रान्तर ॥ वानप्रस्थाश्रमी जो नर ॥ जाउन राकावे सा
 चेद्दा ॥ अतिसादर भिक्षार्थ ॥ २६ ॥ सेवितासा ही काचे अन्नासी ॥ शुद्धसत्त्वतासाधकासी ॥ तकाब होय ग्रासो ग्रासी
 शुद्ध अन्नासी हाम हीमा ॥ २७ ॥ यातागी वानप्रस्थाचे द्वार ॥ राको निजावे वारवार ॥ तेणे सत्त्वशुद्धी अनिवार ॥ हो

यसाचारसाधका ॥६२॥ शुद्धिभिक्षेचिये प्राप्ती ॥ सहसुद्धी होयवृत्ति ॥ तेणेवासनांनीः राषनासति ॥ निजशांतिउ
ल्लासो ॥६३॥ वासनानासल्यानि लागी ॥ तोससुखेदेखेजग ॥ विषयासकीकैचीमग ॥ सहजेविरागउद्धवे ॥६४॥

॥ श्लोक ॥ नैतदस्तुतयापश्येत्तद्व्यपमानं विनश्यति ॥ असक्तचित्तविरमेदिहामुत्राचिकीर्षितात् ॥२६॥ टीका ॥

येथेजेजेदिसतेतेमासे ॥ हेसर्वासीप्रयक्षआभासे ॥ परिअक्षानभुल्लेकैसे ॥ विषयवदोविगुतोनी ॥६५॥ यालागीशु
द्धिभिक्षेचियेप्राप्ती ॥ त्यासीशुद्धसत्वसातीवृत्ति ॥ यासीविषयसयुतेनदिसति ॥ माविषयाशक्तिमगकैचि ॥६६॥

हेसेमिथ्याविषयाचेभान ॥ याचेविषयासकनकेमन ॥ यालागीभवस्वर्गसाधन ॥ होकीतोजाणस्पडिना ॥६७॥ हे
साजोविषयासीविरक्त ॥ याचेपरमार्थीलागलेचित्त ॥ तोजगीविचरेउनासक्त ॥ परमार्थयुक्तनिजबाधो ॥६८॥ याचा

निजबाधाचेलक्षण ॥ स्वयसांगताहेनारायण ॥ प्रपंचाचेमिथ्यापण ॥ समाधाननिजामता ॥६९॥ श्लोक ॥ यदेतदा

समिजगन्मौनोवाक्प्रणसहंतं ॥ सर्वमायतितर्केण स्वस्थयनतस्मरेत् ॥३०॥ टीका ॥ मनसावाचाप्रा

णत्वपाही ॥ अंहकारकृतउभयेदेही ॥ जगउाख्याचाटायी ॥ मीथ्यामाइकपाहीआभासे ॥७०॥ हेराआंगीसर्पाभास
श्रुक्तिकेमाजीरजतमप्रकाश ॥ पुरखरिमृगजबाचाविलास ॥ तैसाजगदाभासचिन्मात्री ॥७१॥ जैसास्वप्नीचा

व्यवहार ॥ तैसाभासेचराचर ॥ हेसेमिथ्याजाणोनिसाचार ॥ पुढतिस्मरणादरस्फुरेना ॥७२॥ जोजागाआत्मा
इक्षंभूत ॥ तैस्वप्नभोगनवाढीचित्त ॥ तेविस्वस्वरूपिसुनिश्चीत ॥ तोप्रपंचजातस्मरेना ॥७३॥ त्रिदंडीबहुदकाचेक

र्म ॥ तुजम्यासांगीतलेसुगम ॥ आताहेसापरमहेसाचेचिन्है ॥ यथानुक्रमेउगावधारि ॥७४॥ सन्यासचेतुर्विधदेख
हेसपरमहेसएक ॥ एकतेबहूदक ॥ कुटिचकतेभिन्न ॥७५॥ कर्मसागोनिजातासन्यासी ॥ ज्ञानध्याननाहीमा

वरी ॥ अन्नालागीस्वप्नामवासी ॥ कुटीचकतयासीबोलीजे ॥७६॥ वार्धिकीकुटिचकाचीपरी ॥ आग्नीहो
त्रस्त्रीयेचासागकरि ॥ परित्रिखासूनअडेकरि ॥ गायत्रिमत्रीअधिकार ॥७७॥ नियुभिक्षापुत्राचेघरि

धर्म

६
६

पणकुटियाचें धैरि ॥ मटिकासा इनि नवचेदुरि ॥ कुटिचकनि धारिया नाव ॥ ७८ ॥ शिखासूत्र यागोनि जाण ॥ कुरु
 निविदं उचैग्रहण ॥ केवळ करिता कर्माचरण ॥ क्षानाचे तक्षण जाणेना ॥ ७९ ॥ नाही वैराग्य वरिष्ठ ॥ नरिसे क्षान नि
 द्याश्रय ॥ अतित्राये सीजा कर्मिष्ठ ॥ बहुदक ज्येष्ठ यासी क्षणति ॥ ८० ॥ जोको वैराग्याचा निधरि ॥ क्षानसौ धनार्थ नि
 धारि ॥ शिखासूत्र कर्म याग करि ॥ उगमचितना वरिनिजनिष्ठा ॥ ८१ ॥ ऐसा याग विलास ॥ यानाव विविध सन्यास ॥
 हेसीया निष्ठेवर्त तोडस ॥ एकपरमहंस ज्या क्षणति ॥ ८२ ॥ एकपरमहंसाचे तक्षण ॥ क्षान परिपाके परिपूर्ण ॥ उत एव
 शांति वोळगे अपण ॥ देखेति ही गुण मिथ्यावे ॥ ८३ ॥ मीथ्या जाणे कर्माचि वार्ता ॥ आपुलि देखेनि यानिष्कर्मता ॥ कर्मत्रिया
 जे कर्तव्यता ॥ तेप्र कृतिचे माथा शारब्धे ॥ ८४ ॥ ऐसीया स्थीतिसावकारा ॥ यानावपै जाणपरमहंस ॥ नाही मट मटिका
 विलास ॥ नित्य उदासनिराश्रयी ॥ ८५ ॥ आतां हंसपरमहंसाचे धर्म ॥ स्वयसागत आहे पुरुषोत्तम ॥ साधर्मचे विषद्वर्म ॥
 ऐकासुगम उद्धवा ॥ ८६ ॥ **श्लोक ॥ क्षान निष्ठा विरक्ता नामद्भक्तो वाऽनेपक्षकः ॥ सतिगानाश्रमांस्तुक्ताचरं**
दविधिगचर ॥ २८ ॥ टीका ॥ विषयाचि नावडे मातु ॥ क्षान प्राप्तीला जी उच्यतु ॥ यापरि जो अतिविरक्तु ॥ तो सन्यासको
 लीजे मुख्यत्वे ॥ ८७ ॥ जो क्षान निष्ठ श्रम सपन्न ॥ सदास्वरूपी रंगले मन ॥ कदान मोडे आनुसंधान ॥ परमहंसास
 मान हाहंस ॥ ८८ ॥ ज्यासी श्रंरिता भगवद्भक्ती ॥ अपेक्षा मात्राचि स्थाती शांति ॥ मोक्षापेक्षा उपजे चिनि ॥ हे सन्यासप
 ध्दति अतिश्रेष्ठ ॥ ८९ ॥ क्षान निष्ठा कामद्भक्ता ॥ इही उगम श्रम धर्मदंडादियुक्त ॥ सागकरावाहृदयी समस्त ॥ बाह्यलोकर
 क्षणार्थ शिखावो ॥ ९० ॥ येचि अर्थिचे निरूपण ॥ पुढे सागत श्रीकृष्ण ॥ प्रस्तुत यागाचे तक्षण ॥ ऐकासपूर्ण हरिकोले ॥ ९१ ॥
 आश्रम धर्म समस्त करि ॥ परी विधिकि करत नोधरि ॥ प्रतिबिंबकापतां जनातरी ॥ आपण बोहेरिकापेना ॥ ९२ ॥ ते वि
 स्वधर्मके कर्तव्यता ॥ करिपरि नाही कर्मटता ॥ आपुली कर्मातिता ॥ जाणे तत्त्वतानि जकर्म ॥ ९३ ॥ यापरि स्वधर्म कर्म करि ॥
 परिविधीचे भयतो नधरि ॥ विधिनिषेध वाळून तोडरि ॥ कर्म करि आहेतुके ॥ ९४ ॥ स्वधर्म कर्म कर्तव्यता ॥ करिपरि नहृकता ॥
 आपण कर्मा उतिता ॥ जाणे तत्त्वतानि जकर्म ॥ ९५ ॥ प्रस्तुत हेचि निरूपण ॥ लोकरक्षणार्थ तीगधारण ॥ अंतरि जो नि

दूना पुक्तिने प्रति बाध ॥

कर्मजाण ॥ साचे लक्षण हरि बोले ॥ १७ ॥ जो नातले स्वाश्रम कर्मगती ॥ दंडादिकी गन धरि हाती ॥ ऐसी या स
 वे त्यागाचि स्थीति ॥ पुढे श्रीपतिसांगेले ॥ १६ ॥ **श्लोक** ॥ बुधो बाल को वतु की उ कु बाल ज उ व चरेत ॥ वदतु न स व
 दि दान् गा च यो ने ग म श्र रत ॥ २५ ॥ टीका ॥ विवेक शान शुद्ध आहे परिकाळ काच्या परिपाहे ॥ मानापमान सुखे साहे
 सांडो नि जाय देहा भीमान ॥ १८ ॥ निजने कर्म अतिकुत्रात ॥ परिकर्म ज उदे सा के वळ ॥ कर्म आचे रे ते सकळ ॥ कोरे ही
 विकळ दिसोने ही ॥ १९ ॥ जाणे धर्मा धर्म लक्षण ॥ सर्वार्थ अति सज्ञान ॥ परिन करि प्रश्न समाधान ॥ अप्रमाणी कजाण स्वय
 बोले ॥ २० ॥ कृति प्रश्न समाधान ॥ लौकिकि कोट ल सन्मान ॥ या लागी साक्षे पे जाण ॥ उन्नत वचन स्वय बोले ॥ ११ ॥ वेदत वा
 र्थ विही ते जाणे ॥ ते लौकिकी ना ही मिरवणे ॥ सकळी ही मूर्ख चि ज्ञाणे ॥ तै री पशु लक्षणे स्वये दावि ॥ या लागी वेद वाद सं
 वाद न करी वाद वि आति वादा ॥ येचि अर्थ अति विषद ॥ स्वय गोविंद सांगत ॥ ३ ॥ **श्लोक** ॥ वेद वाद रत्न न स्यात् न पाषांडी न
 ह तु कः ॥ शुक्ल वाद विवादन कंचित् संक्षं समाश्रयत् ॥ ३० ॥ टीका ॥ धरो नियामि मांसक मत्त कर्म काडी चे शास्त्रार्थ ना
 ना वाद कर्मार्थ ॥ न करि निश्चीत निज बाधे ॥ ४ ॥ ताकी काचे अति तर्क ॥ तर्क वितर्क कु तर्क ॥ हे ही वाद करी ना देख ॥ निजाम सुख
 तो जाणे ॥ ५ ॥ बोहेरी ब्रह्मज्ञान गर्जे तो उ ॥ भीतर विषया चि वासना वा उ ॥ ऐसे महावादी प्रच उ ॥ अत न्यपाखा उ या ना व ॥ ६ ॥
 न सो नि ब्रह्म अनुभव साचार ॥ जो उखे दि निजा चार ॥ तो के वळ पासांडी नर ॥ उदर भर दुःशील ॥ ७ ॥ ऐसी या वादा चा विगळ
 जाचे वाचे सी ना ही आकु माक ॥ न लगे अस सा चा ही मळ ॥ तो नित्य निर्मळ निज बोधो ॥ ८ ॥ शुक्ल वाद रथा गोष्टी ॥ सात ही
 वाग्वा द्गुटि ॥ होय न होय कपाळ पिटि ॥ मिथ्या चा वटि करि ना ॥ ९ ॥ ऐसी या वे वा दा चि कथा ॥ दृष्टी न पाहे निज क्षाता ॥ मास
 य करि ल ऐसा वाता ॥ हे सर्वथा घडे ना ॥ १० ॥ होता शास्त्रार्थ महावादे ॥ स्वये जाणे रोग रोगार्थ शुद्ध ॥ तेथ न करि पक्षपात ॥ जाणे
 परि वाद बोले ना ॥ ११ ॥ श्रुति स्मृति सी विरुद्ध ॥ होता देखे अति वाद ॥ स्वये जाणे शास्त्रार्थ शुद्ध ॥ परिपक्षपात करि ना ॥ १२ ॥
 वाग्वा दि बोलता जाण ॥ दुख वे ल पुटि लाचे मन ॥ काक्षो भेल स्यातः कर्ण ॥ या लागी वचन बोले ना ॥ १३ ॥ **श्लोक** ॥ ॥

नोद जेतजनादीरो जनंचोदे जय न्तु ॥ अतिवादांस्ति ति क्षत नाव मन्यं त कंचन ॥३१॥ टिका
 जनापासोनिउद्देगगति ॥ क्षाननपवेसर्वथाचिति ॥ निदाअवेगणणामानिति ॥ तेउअमस्थीति स्वयसाहे ॥३२॥ ज
 नजेजेउपद्रवदेति ॥ क्षाताराहेएसीयारिति ॥ मीचिआत्मायेकसर्वभूति ॥ यात्मागीखंतिमानिना ॥३३॥ उगापुली
 याआवएवविकारता ॥ उद्देगनपवेचिना ॥ तेविसर्वाभूति एकालता ॥ जाणूनतत्वताउबगुनमानि ॥३४॥ तैसेचि
 ज्याचियास्थीति ॥ भूतेउद्देगनमानिति ॥ ज्याचियानि जाचारगति ॥ रुखीहोतिजीवमात्रा ॥३५॥ सर्वभूतिभगव
 आहे ॥ सणेसासीउपद्रवहोय ॥ यात्मागीवागविताहातपाये ॥ सावधरोहेनिजदृष्टी ॥३६॥ थोरदेताउगारोळी ॥ स
 णेदचकेतमनमाळी ॥ कानेटेभवडीताजपमाळी ॥ देवाचेकपाळीसणेतागे ॥३७॥ यात्मागीकरचरणच्याचेष्टा ॥
 आवरोनियानिजात्मनिष्टा ॥ भूतित्तागोनेदिचेष्टा ॥ आवरोनियानिजात्मनिष्टा ॥ सणेवैकुण्ठाउपद्रवतागे ॥३८॥
 एसीएकीयानिजात्मगति ॥ उद्देगउपजोनेदिभूति ॥ तेथेवाग्नादाचिगति ॥ कैशारितिसंभवे ॥३९॥ सवेभूतात्माई
 श्वर यात्मागीउंचेनकोलेउत्तर ॥ तेथअतिवादासीउत्तरेथे ॥ सर्वथासमोरउचलीना ॥४०॥ पउत्माजीनसंकटप्रा
 णांति ॥ अपमाननकरेव्यली ॥ अपमानिनाभूताकृति ॥ सर्वाभूतिहरिदेसे ॥४१॥ जनास्तवउद्देगता ॥ कदाकाळी
 नपावेहाता ॥ क्षासापासोनिउद्देगता ॥ नहेसर्वथाजनासी ॥४२॥ एकीमिजात्मस्थितिसाचार ॥ तोकाणासीनकरेवैर
 येचिअर्थीसारगधरा ॥ विषदउत्तरसांगत ॥४३॥ श्लोक ॥ देहमुद्धिश्यपसुवद्धं कुर्यान्निकंनचित् ॥ एकएवप
 रात्यात्माभूतेखात्मन्यवस्थितः ॥४४॥ टिका ॥ केवळपशूचियापरि ॥ होउनियोदेहउग्रहकारि ॥ कोणासीवैरनकरि ॥
 तेहीपरिपरियसे ॥४५॥ प्रकृतिपुरुषचिदात्माआहे ॥ तोचिभूतिभूतात्मापाहे ॥ मजमाजीहीतोचिराहे ॥ एसीसर्वभूता
 एकालताजो ॥४६॥ सांसीकोणआसकोणइतर ॥ कोणासीकरावेवैर ॥ सर्वभूतिमिचिसाचार ॥ निरतरनिजासा ॥४७॥
 एकआत्मासर्वभूतात ॥ येचिअर्थाचेदृष्टात ॥ स्वयेसांगे श्रीकृष्णार्थ ॥ श्रोतासावचीतउद्भव ॥४८॥ श्लोक ॥
 यथेदुस्वपात्रेषु भूतान्येकात्मकानिच ॥ अतब्धानविवीदेतकालेऽज्ञानं क्वचित् ॥ तब्धानह्यप्येनूतिमातु

सय

अथं देवतं चितं ॥ ३३ ॥ **टिका** ॥ सहस्रद्यति भरत्मा जळ ॥ विवेकचिचं इम उळ ॥ तेविनिजात्मा एककेवळ ॥ ३३ ॥ तिस
कळभूतात्मा ॥ ३० ॥ देवसिभूता कृतिभिन्न ॥ त्याहीपरम कारणिअभिन्न ॥ जेविआंळकारिस्ववर्णी ॥ आकारिहीजानभि
नलना ही ॥ ३१ ॥ जेविमृत्तिकेचिगोकुळकळी ॥ नानाकारिपुज्यसाती ॥ परिमृत्तिकाचिसंचती ॥ तेविभूतेभासतीभगवं
ति ॥ ३२ ॥ काविणो नियासूतेसूत ॥ शोकापरकळाक्षणत ॥ तैवीवस्तूचिवस्तूयेयथ ॥ साकारभासतभवरूपे ॥ ३३ ॥ एवं
साकारानिराकार ॥ उभयताब्रह्मचिसाचार ॥ ऐसाजाचाज्ञाननिधरि ॥ याचाआहारतु ऐक ॥ ३४ ॥ आहारानमिळेजीयका
ळी ॥ दुःखीन होयतीयकाळी ॥ आन्तात्मागीनतळमळी ॥ धारणाधरिवळी ॥ ३५ ॥ आहारमिळात्माउत्तम ॥ हरिखेजेनाम
नोधर्म ॥ देवाधिनजाणेवर्मी ॥ निजकर्मप्राप्तीसी ॥ ३६ ॥ एवंप्राप्ताप्राप्तीचीकथा ॥ जाणेदेवाधीनत्वता ॥ यात्मागीहर्षविषाद
ता ॥ याचेचिन्तास्पृशना ॥ ३७ ॥ देवाधिनप्राप्तीप्राणीयासी ॥ ऐसेसत्यकळलेज्यासी ॥ तेभिक्षेसीकाहीउणेक्षणसी ॥ तेचिहृषी
केरीसांगत ॥ ३८ ॥ **श्लोक** आहारार्थसमीहेन्युक्ततत्राणधारणे ॥ तवविमृश्यतेतन्ननदितायविहृत्ययमि

३४ ॥ **टिका** ॥ पात्रावयाउमाश्रमधर्मासी ॥ अवश्यहीडावेभिक्षेसी ॥ मधुकरीसन्यासी ॥ स्वधर्मासीअतिविहीत ॥ ३९ ॥
साधकीतरिआहार्थ ॥ आवदाहीडावेलागेयथ ॥ आहारेविणयाचेचिन ॥ विक्षेपभूतहोपाहे ॥ ४० ॥ तीहीरसासलीसाडुन ॥ भि
क्षेसीकरागप्रयुन ॥ आहारेविणयाचेमन ॥ आतिक्षीणसर्वथा ॥ ४१ ॥ साधकासीआहारेविण ॥ नसंभवेश्रवणमनन ॥ न
करेवैध्यानचित्तन ॥ उगनुसंधानराहेना ॥ ४२ ॥ सन्याशासीध्याननघेडे ॥ तेआश्रमधमचित्तरुबुडे ॥ यात्मागीभिक्षे
सीरोकडे ॥ हींउणेघेडयथार्थ ॥ ४३ ॥ मीळावेमिळानगोड ॥ हसाडोनिरसनाचाड ॥ करावेभिक्षेचेकोड ॥ परमार्थदृष्टसा
धावया ॥ ४४ ॥ आहारधेतलीयाजाण ॥ साधकासीघेडसाधन ॥ साधनकरिताप्रगटेज्ञान ॥ ज्ञानास्तवजाणनिजमोक्ष
लाभे ॥ ४५ ॥ सर्वथानवाच्छेवेमिळान ॥ तरिभिक्षामागाविकोण ॥ ऐसेकाहीकळीलमन ॥ तेचिश्चीकृष्णसांगत ॥ ४६

श्लोक यदुक्तं यापपलात्मासंस्था ॥ उक्तं सुखापरं ॥ यथा वासुसंभवासी ॥ प्राणनामभनेतुमा ॥ ३५ ॥

सहजप्रियेसीअलेजाण ॥ सुखअथवापिच्छान ॥ लेणेकरावेप्राणधारण ॥ रसनालासनसाडोनि ॥ ४७ ॥ निद्रा
 लस्याचेनयप्रस्थान ॥ तैसेकरावेप्राणधारण ॥ ४८ ॥ सावेअसनध्यान ॥ युक्तआहारजाणयानाव ॥ ४९ ॥ वलक
 लप्राथवाअजिन ॥ नवेअथवावस्त्रजीर्ण ॥ सहजेप्राप्तशाक्याजाण ॥ करिप्रावर्णयथासुखे ॥ ५० ॥ कंधाहोकास
 दुअस्तरण ॥ अणराख्याकाभूमिदायन ॥ स्वभावेप्राप्तशाक्याजाण ॥ तेथेहीदायनकरिमुनी ॥ ५१ ॥ मी एकभोला
 दायनकरिता ॥ हेहीनाहीसासीअहंता ॥ रत्नानादि कर्मतिलता ॥ साचिआभिमानताहरिसांगे ॥ ५२ ॥ श्लोक
 शोचमाचमंस्नानंनतुवादनवाचरेत् ॥ अन्याश्वनियमान्स्नानानोयथाउहेलीलथवरः ॥ ३६ ॥ टिका
 आचमनशोचाचार ॥ करितानकेविधिविकर ॥ कर्माभिमानाचामोउत्ताथार ॥ जैसामिआवतारतैसातो ५२ ॥ जैसामि
 लीलाआवतारधरि आलीपणेकर्मकरि तैसीचिजाणयोग्याचीपरि सर्वकर्माचारिआलीस ५३ ॥ ज्यासीविधिचेभय
 नाहीपोरि तोकर्मकरावघाकदानुरि तेचिविखीचिविषदगोरि कृष्णजगजेरिसांगत ॥ ५४ ॥ श्लोक
 क्यायाचमदीक्षयाहता ॥ आदेहांताक्वचित्ख्यातिस्ततःसपयतेमया ॥ ३७ ॥ टिका ॥ कर्मकरणेनकरणे ऐसीयासंदे
 हाचेठाने ॥ पळालेमासेनिद्वाने ॥ संकल्पाचेजीणेनिमाळे ॥ ५५ ॥ संकल्पनिमताचियापोरि ॥ विरालीकींगेद्हाचीगाठि ॥ भेदा
 चिहरपतीत्रिपुरि ॥ मिपरमासदिरिदेखता ॥ ५६ ॥ ज्यासीनाहीभेदाचेभान ॥ याचेदेहाचेभरणपोषण ॥ स्नानभोजनदाय
 न ॥ गमनागमनकेविघडे ॥ ५७ ॥ जोजीनोनियासेकल्पभ्रान्ति ॥ त्रिस्तुद्धीमिनलाअद्वैति ॥ याचेदेहाचिस्थितिगति ॥ प्रारब्धा
 हातिनिश्चीत ॥ ५८ ॥ दक्षसमूळउपउत्तीयापाहे ॥ परिसाद्रतादक्षीराहे ॥ ताबुलखाउनियाजाय ॥ तरिअधरिराहेसरंगता ॥ ५९ ॥
 होकाकन्यादानकेसापाहे ॥ वरुकन्यायेऊ हीनिजाय ॥ तरिउगामानउरलापाहे ॥ रूसणेफुगणेदेहांत ॥ ६० ॥ तैसाअभिमा
 नाचेनिसके ॥ मीकर्मकरताक्षणविवळे ॥ तेअहंतानिमेशानबळे ॥ तरिद्वारिश्चकेप्रारब्धे ॥ ६१ ॥ कुल्लालंदडभांडेचेऊनि
 जाय ॥ पूर्वभेवडीचक्रंभवंतराहे ॥ तेविआभिमानगेतीयापाहे ॥ देहवर्ततआहेप्रारब्धे ॥ ६२ ॥ यादेहाचेभरणपोषण ॥

कर्म

प्रारब्धची करीते जाण ॥ शाह्यासी प्रपंचभान ॥ ससते जाणअसेना ॥ ६३ ॥ जैसी मिथ्या ठाया देहापासी ॥
 तैसे देहसज्ञासी ॥ घातागी देहबुद्धीयासी ॥ ससतेसी उपजेना ॥ ६४ ॥ छायासुखासनामाजीवैसे ॥ काविकेवरिपउ
 लीरिसे ॥ साद्यायेचे अभिमानवसे ॥ सुखदुःखनसेपुरुषासी ॥ ६५ ॥ तविदेहाचिख्यातिविपति ॥ बाधीनाज्ञानाचस्थीति
 प्रारब्धक्षयाचे उंति ॥ विदेरुपावति केवल्य ॥ ६६ ॥ जैसी जन्माचिले हरि ॥ निश्चय होयसागरि ॥ तैसाज्ञानामजमाहारि
 विदेहकरिसमरसे ॥ ६७ ॥ उगमसंमैगे प्रवाहगति ॥ सरितेचि नामरूपख्याति ॥ जेवि प्रलयोरकि हारपति ॥ तेविसमरस
 ति मजमाजी ॥ ६८ ॥ अपरोक्षसाक्षात्कारसत्यासी ॥ याचीस्थीतिगति स्वधर्मसी ॥ उद्भवासांगीतेलीतुजपासी ॥ उगता
 मुमुक्षुसत्यासीतेका ॥ ६९ ॥ श्लोक ॥ दुखादकेषु कामेषु जातनिर्वद आमवान् ॥ अजिज्ञासितमद्यमागुंस्तुनिमुपा
 व्रजेत् ॥ ७० ॥ टिका ॥ बोधाधरुनिसमूह ॥ ज्याचेउतरोतर दुःखफळ ॥ अतिबोधकवेषयनाळ ॥ यासीकेवळ जोअनासत
 ॥ ७१ ॥ मासेप्रासीलागीचिंत ॥ सदा ज्याचे उातभूत ॥ स्वधर्मवर्तत ॥ जोवेदशास्त्रार्थविवंचि ॥ ७२ ॥ देहामूत्रभोगीनि
 श्रित ॥ आसतेअसे ज्याचेचिंत ॥ ऐसा जोका नियविरक्त ॥ अतिविख्यात मुमुक्षु ॥ ७३ ॥ तेणेसाधावया ब्रह्मज्ञान ॥ तेचिसा
 धनित्वावितामन ॥ स्वकर्मज्ञातीयावितक्षण ॥ उत्तमीनागवण प्रत्यवायाची ॥ ७४ ॥ तेणेकर्मसत्यासोनिजाण ॥ करावे
 सत्यासग्रहण ॥ गुरुसीरिघावशरण ॥ तेणेब्रह्मज्ञानपरप्राप्ती ॥ ७५ ॥ एककेवळभावार्थ ॥ तेणेस्वधर्मकर्मगती ॥
 तेणेशास्त्रश्रवणधुसति ॥ परिमासीप्रितिभगनिवार ॥ ७६ ॥ तेणेहीसत्यासूनिजाण ॥ गुरुसीरिघावशरण ॥ त्यासीही
 गुरुकृपाजाण ॥ ब्रह्मज्ञान उरतिसीध ॥ ७७ ॥ गुरुकरावाअतिशांत ॥ शास्त्रार्थपरमार्थपारोगत ॥ त्याचे शोवचाभा
 वार्थ ॥ स्वयेश्रीकृष्णनाथसांगत ॥ ७८ ॥ श्लोक ॥ तावत्परिचरद्रुतः श्रद्धावानसयुक्तः ॥ यावद्द्रुहाविजानी
 यान्मामेवमादतः ॥ ७९ ॥ टिका ॥ अचळअमळविनाशा ॥ परापरतरपरेरा ॥ गुरुतोपरश्रद्धा ॥ हादृष्टविश्वास
 थरावा ॥ ८० ॥ याविश्वासाचापडीपाडी ॥ नवलगुरुचरणिभगवडी ॥ निसुनृतननविगोडी ॥ चढीवढीभजनार्थ ॥ ८१ ॥ हेसीया

भजनपरवडी ॥ हृदयी श्रद्धा उथळे गाठी ॥ गुरु आसेचि नुलघी काडी ॥ आसेळे तो डी समूळ ॥ ८० ॥ गुरुवाक्याचे निश्र
 वणे ॥ विकल्पाचे खातखणे ॥ संकल्पासी सूळी देणे ॥ जीवघेणे आभीमानाचा ॥ ८१ ॥ तेथे आसुया क्वेचि उठी ॥ धाकेचि
 निमाली उठाउठि ॥ ऐसी गुरुचरणि श्रद्धामोठि ॥ परब्रह्मरुची गुरुपाहे ॥ ८२ ॥ निर्गुणजे निर्विकारु ॥ तोचि मूर्तिमंतमाहा
 गुरु ॥ करुनि अकर्ता ईश्वरु ॥ तोचि हासाचारु गुरुमाहा ॥ ८३ ॥ नियनिर्विकल्पदेख ॥ ज्यासी लक्षणधिसुख ॥ तेमाह्यागु
 रुचेचरणोदक ॥ ऐसा भावनेटक भावार्थी ॥ ८४ ॥ गुरुतेपाहता ब्रह्मरुची ॥ त्रिव्य ब्रह्मले आत्मापुळी ॥ ब्रह्मरूपदेखे
 छी ॥ निजऐक्यामिदि गुरुचरणी ॥ ८५ ॥ ऐसे ब्रह्मरूपिले व्याषडे ॥ ते गुरुसेवा करणेपडे ॥ ऐक्यसात्याहीपुढे ॥ ऐवानमाडे
 अंखडले ॥ ८६ ॥ कापुरघातलीयाजनी ॥ स्वयेविरो निजनी परिमनी ॥ तेकी अहंजाउनिसेवासकनी ॥ सर्वासवकांनी गुरु
 चरणी ॥ ८७ ॥ ऐसी अवस्थानयता हाता ॥ केवळमंडुनियामाथा ॥ सन्यासी लक्षणविपूज्यता ॥ याचि अनुचितता हरिबोले ॥ ८८
 स्वये सन्यासी आंगीकारि ॥ ब्रह्मसाक्षात्कारजोन करि ॥ यात्मागी स्वये श्रीहरी ॥ अतिथिः कारी निर्दिता ॥ ८९ ॥ **श्लोक ॥**
यस्त्वं संयतषड्गुः प्रचंडे दिपसारथिः ॥ ज्ञानवैराग्यरही तस्त्रिंशदंडमुपजोवति ॥ ४० ॥ टिका ॥ कुरानाममा
सारथी निद्रुते मांच धर्महा ॥ अविपक कषायोरमादमुख्या अविहीर्यते ॥ ४१ ॥ टिका ॥ नाही वैराग्याची रथीति
 नसता विषयविरली ॥ हरेवोदखी सन्यासवेति ॥ केवळवृत्तिअन्वार्थ ॥ ९० ॥ सन्यासघेतो पूर्वदृष्टी ॥ जैवैराग्यहोतेपो
 टि ॥ ते सन्यासघेतला पाटी ॥ उठाउठी पळाले ॥ ९१ ॥ ज्ञाने द्वीये पाचसाहावे मन ॥ हाचि अरिषड्गुजाण ॥ याचे न करिता
 निर्दमण ॥ सन्यासपणतो विटंब ॥ ९२ ॥ अवैराग्यसकाममन ॥ तेणे विषयाकृतीत बुद्धीजाण ॥ नाही ज्ञानध्यानसाध
 न ॥ दंडधारणउदरार्थ ॥ ९३ ॥ जैनुपजे अनुतापजाण ॥ न करि श्रवणमनन ॥ आदरेन साधीच साधन ॥ ज्यासि ब्रह्म
 ज्ञान नहेचि ॥ ९४ ॥ याचा व्यर्थ सन्यासजाण ॥ व्यर्थ याचे दंडणमुंडण ॥ व्यर्थ काषाय वस्त्राग्रहण ॥ वेषधारण
 ठाचे ॥ ९५ ॥ सन्यासघेतलीया पाटि ॥ कामउचंबडत उठि ॥ क्रोधलोभाचि धुमेचि आगीदि ॥ चौगुणपौटि आभिमान ॥ ९६ ॥
 असक्ति अधिक आधिक उठि ॥ सदाग्रामणीचा वरि ॥ करणेपै शून्याचा गोळी ॥ दंडकासोडि दंडार्थी ॥ ९७ ॥

अनादि कारि दंड ग्रहण ॥ तेणे सन्यासरूपे जाण ॥ केवळ उगाती नागवण ॥ उगापण उगापण नाडी ले ॥ ९७ ॥
 नाडी ले यज्ञाधी कारि स्मरण ॥ नाडी ले स्वधाकारि पितृगण ॥ नाडी ले ऋषीभूतगण ॥ बळीतर्पण उरके ना ॥ ९९ ॥
 जीवरूपे मिपरमात्मा आपण ॥ त्यामज हृदयस्थाटा किते जाण ॥ जीवोद्धारि सन्यास ग्रहण ॥ तेचि दृढ बंधन मज
 जाते ॥ १०० ॥ सन्यास ग्रहण दृढ बंधन ॥ कावयाकाय कारण ॥ तेचि विषयचे निरूपण ॥ स्वये नारायण बोलीला ॥ १०१ ॥
 पूर्वज्ञो कौच तिनिचरण ॥ तेथिल ही निरूपण ॥ श्रोते कावसावधान ॥ सणे विलक्षण कोणी हणे ॥ १०२ ॥ श्लोक ॥
 त्रैकवरण ॥ निरुते मांच धर्म हा ॥ अविपक कबायोस्मा ॥ दुमुखा च विहीयते ॥ ॥ टीका ॥ करोनिया
 सन्यासग्रहण ॥ न करि ध्यान ध्यानसाधन ॥ न करि प्रणव उच्चारण ॥ अविरक्त जाण विषयाधी ॥ ३ ॥ तेणे दारादि
 अभिवाषण ॥ करिति द्रव्याचे संरक्षण ॥ आशि गोदाना दीग्रहण ॥ पचनपावण करविति ॥ ४ ॥ मठाधिपत्याचि
 घेउपाधि ॥ धनधान्यस्नेहसमृद्धी ॥ नानावाढविति उपाधी ॥ जीवात्मो शुद्धि नाडीला ॥ ५ ॥ ऐसे करिता अ
 धर्मचैरेण ॥ जीवासीत्तागले दृढ बंधन ॥ रहलोक परलोक साधन ॥ ह्यानरे देहा जाण नाडला ॥ ६ ॥ चौप्रासी
 शीलक्षयोनिप्रति ॥ जै असख्याफेरे होति ॥ ते नरे देहाचि प्रासी ॥ अवचटपावतिसभाग्र्य ॥ ७ ॥ ह्यानरे देहा
 सी जाण ॥ स्वये नागवला आपण ॥ करिता अधर्मचरण ॥ नरकदारुन सन्याशा ॥ ८ ॥ ज्या नावगा उगाश्रम
 चौथा ॥ जो देव ह्मणे माझे माथा ॥ तेथे ही श्रधर्म करिता ॥ नरकपातापाविजे ॥ ९ ॥ ज्या नरकाचे गयी ॥ कोटिव
 र्षवुडतापाही ॥ धावचि नलगे काही ॥ तेसे गयी बुडाले ॥ १० ॥ मुख्यचतुर्था श्रीहेस्वीति ॥ तैरतर उगाश्र
 माकैचि गति ॥ यातागी उगाश्रम धर्मयुक्ती ॥ स्वयश्रीपतिसांगत ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ भिक्षो धर्मः क्रामोऽहिसा
 तप इत्याव नौकसः ॥ गृहीणो भूतरक्षे ज्यादि जस्वाचार्यसेवनं ॥ १२ ॥ टीका ॥ सन्यासी मुख्य श्रम
 सबाह्दं द्द्रीयने म ॥ अहीसात्याचा धर्म ॥ हा परम धर्म सन्याशासी ॥ १३ ॥ वाण प्रस्थाचा स्वधर्म ॥ तप प्राधान्य मेत्र

प

त्रि

धन

होम ॥ उमाता गृहस्था चोने म ॥ ति ही उमा श्रमा विश्राम दीन दाता ॥ १३ ॥ गृहस्था मुख्य उग्नि होत्र जाण ॥ स
 न्याशी ब्रह्मचा स्यासी द्यावे अन्न ॥ करावे भूत संरक्षण ॥ ते ही लक्षण आवधारि ॥ १४ ॥ असि ले नि समर्थ जाण
 अन्न वेदत्र जीवन ॥ लृणपण निवास स्थान ॥ देउ नि दिन रक्षावे ॥ १५ ॥ ब्रह्मचा याचे स्वधर्म जाण ॥ श्रद्धा युक्त गुरुसे
 वण ॥ एवं अश्रम धर्म लक्षण ॥ मुख्यत्वे हे जाण उद्धवा ॥ १६ ॥ गृहस्था श्रीमि जो धर्म आहे ॥ तो इतरा आश्रमी करून ये
 इतरा श्रमीचा धर्म पाहे ॥ गृहस्था श्रमि होय करणीय ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ ब्रह्मचर्ये तपः शौचे सतोषे भूतसौहृदम् ॥
 गृहस्था स्यात्पुत्रो गंतुः सर्वेषां मदुपासनं ॥ १८ ॥ टिका ॥ गृहस्थे होवया नीः पाप ॥ राके तो करावा जपतप ॥ उभय श्रौ
 चाचे स्वरूप ॥ अति साटाप करावे ॥ १९ ॥ पोटी चिसांडु निकु समुस ॥ यथात्मभे अति संतोष ॥ परोकारि अति हव्यास
 सुदुदय सर्वासी स्यात्मत्वे ॥ २० ॥ गृहस्थी ब्रह्मचर्य लक्षण ॥ श्रुतु काळी दारा भिगमन ॥ मुख्यत्वे करावे मासे भजन
 हा स्वधर्म जाण सर्वाचा ॥ २० ॥ सर्व आश्रम सर्ववर्ण ॥ यासी हाचि स्वधर्म जाण ॥ सांडु निविषयाचे भा न ॥ मासे भ
 जन करावे ॥ २१ ॥ करिता स्वधर्म मासी भक्ति ॥ भक्तासी होय जे प्राप्ती ॥ ते चिसांगत आहे श्रीपति ॥ उद्धवा प्रतिस्वाम
 दे ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ इति मांयः स्वधर्मेण भजन्मियं मनन्यभाक् ॥ सर्वभूतं पुमद्भावं मद्भक्तिं विदते चिरात् ॥
 २३ ॥ टिका ॥ सर्वभावे अनन्यगति ॥ करिता स्वधर्म मासी भक्ति ॥ मासा भाव सर्वाभूती ॥ री घृगति उल्हासे ॥ २३ ॥
 मद्भावे जो उल्हा स्वर्भूति ॥ तेणे भगटे मासी चोपी भक्ति ॥ जीचा पादचारी मुक्ति ॥ सदाता गति स्वानंदे ॥ २४ ॥ उगनिवा
 र अनन्यगति ॥ सर्वस्वे ज्यासी मासी प्रीति ॥ तोला हे मासी परमभक्ति ॥ जाणनिश्चिती उद्धवा ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ भक्त्यो
 दुःखानपायिन्या सर्वलोक महेश्वरं ॥ सर्वोपसृप्यं ब्रह्मकारणं मोषयाति सः ॥ २५ ॥ टिका ॥ सकळ सच्चीदानंद
 शिष्येति ॥ जीमा जी सापडे मीस हजगति ॥ तीनाव मासी परमभक्ति ॥ जाणनिश्चिती उद्धवा ॥ २६ ॥ विपरित संसाराचे भा न ॥
 दिसे द्वा विलक्षण ॥ तथे सदा स्वानंद पूर्ण ॥ तेचोपी जाण भक्ति मासी ॥ २७ ॥ तथे देव भक्त एक होति ॥ एकपणे भजन

धावति ॥ ४९ ॥ घरी आणोनि दिली काम धेनु ॥ आत्मान पोसवे अणू ॥ ताकारा टि हे ति हे बसुन ॥ आली नागवणते
 नेणे ॥ ३५० ॥ तेवि म्या जाण गायत्री मंत्र ॥ दिधला ब्राह्मणा सीस्यतत्र ॥ तोउपेक्षोनिया मंत्र तत्र ॥ मूश चार आचरति ॥ ५१ ॥
 सौरशाक्त गाणपत्यादि जाण ॥ नानामंत्र दीक्षा घेति ब्राह्मणे ॥ परिगायत्रीचे अनुष्ठान ॥ एक ही जाणन करिति ॥ ५२ ॥ नाही गाय
 त्रीचे अनुष्ठान ॥ परिविपरित जाले आन ॥ गायत्रीचे मंत्र जाण ॥ हे ति ब्राह्मण रूयार्थ ॥ ५३ ॥ गायत्री मंत्र असो निघरि ॥ तिचा भ्रा
 वार्थ कोणी धरी ॥ दीक्षोला गी मूर्खाचे द्वारि ॥ लोकी जे दिजवरि ऐसे साले ॥ ५४ ॥ शस्त्रा श्री रथ सदृश ॥ द्यावरी बैसवि
 ला भेड ॥ सांडु निपळणे मानीसू खाडु ॥ न शके विभाडु रणा गणा ॥ ५५ ॥ तेविवेद रूपमि नासयण ॥ ब्राह्मण हृदयी अस जाण
 द्याचे नेणोनि महीमान ॥ वेद परायण विकी ति ॥ ५६ ॥ गोंछुनिया स्वर्ग फळ ॥ नानायाग करिती अंबळ ॥ काम कलना केवळ
 स्वधर्म विकळ पाडी ति ॥ ५७ ॥ येदि प्रतिपाद्य कर्म फळ ॥ तो वेदु मिथ्यान के केवळ ॥ तो वेद वाद समूळ ॥ नेणोनि बरळ ह मानी सी
 ५८ ॥ द्यावया वोखदाचि वाटि ॥ मातासाखरे दचि मुटि ॥ ते फळ मुख्य ने के दळी ॥ जावया पोठी चा माहारो ग ॥ ५९ ॥ तेविवे
 द बोले जे फळ ॥ ते अचि रोचके केवळ ॥ स्वधर्म विचारिता समुळ ॥ चिंतमय क्षाळक ॥ ६० ॥ स्वधर्म साडु नि सर्वथा ॥ सका
 म कर्म करू जाता ॥ ते ही शिण ल्मावे गळत लता ॥ छुद्र कामता फळना ॥ ६१ ॥ जेणे रूय अमृत ये हाता ॥ ते वैचूनि मद्यचे ता ॥ अ
 धर्म धाणि उन्मत्तता ॥ पिशाचता जग थुंकी ॥ ६२ ॥ स्वपतिसी काम भोगी ता ॥ परलोक पावे पति व्रता ॥ तेचि परपुरुषा सीरम ता
 अधः पाताने तसे ॥ ६३ ॥ जिहाडु रूक्ति बोलता ॥ यम प्रहार वाजाति माथा ॥ तिणे चिराम राम अणता ॥ हरि भक्ता ये मकापे ॥ ६४ ॥
 तेवि पावो नि उत्तम जन्म ॥ कर्म करुनि सकाम ॥ भोगा वेदुःख परम ॥ मरण जन्म अनिवार ॥ ६५ ॥ तेणेचि देहे स्वधर्म ॥ करि तो
 निरसे सकळ कर्म ॥ निगरे जन्म मरेणे ॥ बहुता हेवर्म कळे ना ॥ ६६ ॥ स्वधर्म घडे भगवद्भक्ति ॥ ऐसी अति गुह्य ओह विपु ति
 ते मीसांगे न तुज प्रति ॥ यथानि गुति उडवा ॥ ६७ ॥ स्वधर्म करणे अवश्यक ॥ तेथे सांडणे फळा भिळारव ॥ तेचि मदर्पण चोरव ॥ न
 करि तो देख संकल्प ॥ ६८ ॥ लोका घरि चाचिरांजणी ॥ ती घति मुक्ता फळा च्या अ्रेणी ॥ काता म्रपणी ॥ समुद्र भिळणी शोधवि ॥ ६९ ॥
 अपुलेचि धरिचि सोड ॥ फळति कल्पतरूचे निपोड ॥ तरि अमरावतिचे चाड ॥ दयावेडे काशीणति ॥ ७० ॥ लोकासदुःचेति र्थे ता ॥ पाविजे परम
 पवित्रता ॥ तरि धावा वया नाना ति र्था ॥ विज्ञासता ते का र्थ ॥ ७१ ॥ कांई श्वरचे पिता पूजिता ॥ निज मोक्षला भे आरता ॥ तरि भजावे दे मार

यता ॥ कोणया अर्थासज्ञानी ॥ ७२ ॥ ते विस्व कर्मचिकरिता ॥ त्राभे आपत्तीनिष्कामता ॥ ते स्वधर्मिकामकलीता ॥ जीवनि
 जस्यार्थानाडले ॥ ७३ ॥ निर्विकल्पे स्वधर्मचरण ॥ सुनावमासे सुदुभजन ॥ तेणे भजने हाउनि प्रसन्न ॥ मीविवेक ज्ञानभ
 कासीरे ॥ ७४ ॥ तेणे चि शाने होय शुद्ध मति ॥ चित्त शुद्धि मासी परमभक्ति ॥ ते भक्तीने मासी प्राप्ती ॥ भक्तपावति उद्धता ॥ ७५ ॥ या लागी
 जे नैराशे स्वधर्मकर्म ॥ ते चि मासे भजन परम ॥ तेणे भजणे भक्ते नम ॥ स्वयपुरुषोत्तम होउनि राति ॥ ७६ ॥ यापरि स्वधर्मस्वि
 ति ॥ त्राभे आपत्तीनिजमुक्ती ॥ ते चि म्यातु ज प्रति ॥ यथानिगुतिसांगीतली ॥ ७७ ॥ **श्लोकः ॥ एतत्तेऽभिहितं साधुना ॥**
॥ ७८ ॥ तत्र स्वधर्मो ॥ यथा स्वधर्मसंयुक्तो भक्तो मासमिवात्सुरं ॥ ७९ ॥ त्रिका ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे एकाद
शस्कंधे ७१ अध्यायः ॥ १०५ ॥ त्रिका ॥ उद्ध गापुस्ती लेहाम ज प्रति ॥ स्वधर्मे के विघेडमुक्ती ॥ भक्तीने पाविजे निजमुक्ती ॥
 ते म्यातु ज प्रति सांगीतले ॥ ७८ ॥ हाता आली या स्वधर्म ॥ तत्काम निरसे स्वकर्म ॥ उडोनि जाय भव भ्रम ॥ प्राप्ती परम स्वधर्म ॥
 मासी या प्राप्ती लागी स्वकर्म ॥ नैराशे अचरा वा स्वधर्म ॥ हे ज्या सी कळे वर्म ॥ तया पुरुषोत्तम सदा व द्य ॥ ८० ॥ स्वधर्म ऐसा दि
 नमणी ॥ नैराशे उगवला स्वभुवणी ॥ तो आज्ञान निशानि रसनी ॥ स्वप्रकाशपणी सदा व ती ॥ ८१ ॥ स्वधर्म ऐसे निज आश्रित ॥ जो नि
 विकल्पे सुजाणत ॥ या सी जन्माचा आवर्त ॥ मिश्री अनंत लागो नेरि ॥ ८२ ॥ जे का स्वधर्म विमुख ॥ या सी मा सी प्राप्ती ना ही देख ॥ ८३ ॥
 न्मकोटि परम दुःख ॥ सकामे मुख भोगीति ॥ ८४ ॥ स्वधर्म ऐसा स्पर्शमणि ॥ द्वाप उल्मानि विकल्पणी ॥ तो लाविता दृश्य त्या नि ॥
 चिन्मात्र सुवर्ण ति उरी ॥ ८५ ॥ या स्वधर्म वि अत क्य गोळी ॥ न कळे नैक मी निज दृष्टी ॥ या चि लागी जन्म कोटि ॥ अति संकटि जी
 व भोगी ॥ ८६ ॥ स्वधर्मे करिता स्वकर्म ॥ जे नैक मी चि कळे वर्म ॥ ते विजाडु निमरण जन्म ॥ परं ब्रह्म पावति ॥ ८७ ॥ एवं स्वधर्म यापरि ॥
 तारक होय संसारि ॥ स्वधर्म चि नो वेव रि ॥ तरले भवसा गरि निज भक्त ॥ ८८ ॥ संसार तरले हा बोल कुडा ॥ स्वधर्म करि ति मा सी या चाडा ॥
 होय भवसागर कोरडा ॥ मी सापडे पुढा नि जासा ॥ ८९ ॥ ऐसी स्वधर्म चि योरि ॥ निष्काम ते च्या नि सुकृ मरि ॥ देवो सागे आवती भ रि
 नानापरि प्र बोध ॥ ९० ॥ भक्ति प्राधान्य भागवत ॥ मुख्य भक्ति ते स्वधर्म युक्त ॥ येणे स्वधर्म भक्त समस्त ॥ परम भागवत उद्ध रले ॥ ९१ ॥

25 Jan 88
 6 July 15
 65-26

32761
 2-10-16
 66

कृष्ण
 पान

या स्वधर्मकर्मचारकांत ॥ निजभजनभक्तिचा भावार्थ ॥ उद्धृतासी श्री कृष्णनाथ ॥ स्वयेसांगंत एकादशी ॥ ९१ ॥
 या एकादश्यागोकी ॥ स्वधर्मकर्मसि कसवदि ॥ एकाजनाईना कृपा द्विती ॥ दिकामराडीहेकेली ॥ ९२ ॥ हेकारण
 केहीजनाईने ॥ मजाअं भगी धातलेतेणे ॥ इतिविमि त्पणांचेठाणे ॥ येणेनिकृपणेउदविले ॥ ९३ ॥ उदविले विषयीवि
 षयपण ॥ उदविलेभदाचेभान ॥ उदविले जीवशीवपण ॥ जनाईनेनुक्यानि ॥ ९४ ॥ जनाईने जनकेतेणे ॥ उभात्याकृते
 पदक्षेत्रसेवणे ॥ घालागीसकळ श्रीयातेणे ॥ स्वधर्मपदोमइ जचि ॥ ९५ ॥ मरु जीकागत्मास्यधर्म ॥ कर्मचि होय
 निष्कर्म ॥ संसार होयपरब्र ॥ हेकृपापरमजनाईनी ॥ ९६ ॥ यालागीसाहुनिपायेकृपण ॥ एकाजनाईनासारण ॥
 स्वधर्मकर्मनिरूपण ॥ शाले मपूणितया कृपा ॥ ९७ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशाख्ये श्रीकृष्णः ॥
 १८ ॥ श्रीक
 ॥ ९८ ॥ श्रीक
 ॥ ९९ ॥ श्रीक
 ॥ १०० ॥ श्रीक
 ॥ १०१ ॥ श्रीक
 ॥ १०२ ॥ श्रीक
 ॥ १०३ ॥ श्रीक
 ॥ १०४ ॥ श्रीक
 ॥ १०५ ॥ श्रीक
 ॥ १०६ ॥ श्रीक
 ॥ १०७ ॥ श्रीक
 ॥ १०८ ॥ श्रीक
 ॥ १०९ ॥ श्रीक
 ॥ ११० ॥ श्रीक